is also very much concerned about the passengers, to this aspect. He will, definitely, take note of this and do something. All these trains which are running for more than 18 hours should have a special coach/ medical van where there should be at least two ICUs, one ventilator, oxygen cylinder and other things along with doctors and nurses. I think this will be accepted by all my learned colleagues. It is very, very necessary and it is high time for us to think about it. I hope the way the Railway Minister is working, he would, definitely, take note of this particular request of mine. Thank you very much, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Member associated themselves with the Zero Hour mention raised by the hon. Member: Shri M. Shanmugam (Tamil Nadu), Shrimati Priyanka Chaturvedi (Maharashtra), Shri Jose K. Mani (Kerala), Shri Sandosh Kumar P. (Kerala), Dr. John Brittas (Kerala), Dr. V. Sivadasan (Kerala), Shri Kanakamedala Ravindra Kumar (Andhra Pradesh), Shrimati Mausam Noor (West Bengal), Dr. Anil Sukhdeorao Bonde (Maharashtra), Shri Sukhendu Sekhar Ray (West Bengal), Shri Sujeet Kumar (Odisha), Shri Kamakhya Prasad Tasa (Assam), Shri Mohammed Nadimul Haque (West Bengal), Dr. Amar Patnaik (Odisha), Dr. Santanu Sen (West Bengal), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shri Sanjeev Arora (Punjab), Shrimati Vandana Chavan (Maharashtra), Shri Abir Ranjan Biswas (West Bengal), Shri Rajmani Patel (Madhya Pradesh), Shri Maharaja Sanajaoba Leishemba (Manipur) and Shri Jawhar Sircar (West Bengal), Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu), Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu).

जो माननीय सदस्य एसोसिएट करना चाहते हैं, they may send their names. Now, Shrimati Ranjeet Ranjan — Concern over negative impact of cinema on our youth.

Concern over negative impact of Cinema on our youth

श्रीमती रंजीत रंजन (छत्तीसगढ़) : उपसभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपके माध्यम से यह बताना चाहती हूं कि सिनेमा समाज का आईना होता है। हम लोग सिनेमा देखकर बड़े हुए हैं और सिनेमा, पिक्चर्स हमारी लाइफ में, खासकर युवाओं की लाइफ में बहुत influence रखती हैं। आजकल कुछ इस तरह की पिक्चर्स आ रही हैं कि अगर आप कबीर से शुरू करें, पुष्पा से शुरू करें और अभी एक एनिमल पिक्चर भी चल रही है, तो मैं आपसे कह नहीं पाऊंगी कि मेरी बेटी के साथ बहुत सारी बच्चियाँ थीं, जो कॉलेज के सेकंड ईयर में पढ़ती हैं, वे आधी पिक्चर में ही उठकर रोती हुई चली गईं कि इतनी हिंसा है। महिलाओं के साथ हो रही disrespect को पिक्चरों के द्वारा justify करने पर मुझे लगता है कि कबीर पिक्चर में वह जिस तरह से अपनी वाइफ को ट्रीट करता है, इस मूवी में जिस तरह से अपनी वाइफ को ट्रीट करता है और लोग, समाज एवं

पिक्चर भी जिस तरह से उसको जस्टिफाई करती हुई दिखा रही है - यह बहुत ही शोचनीय विषय है।

उपसभापति जी, मेरा दूसरा विषय युवाओं को लेकर है। बहुत सारे ऐसे एग्ज़ैम्पल्स हैं कि इन पिक्चर्स को, ऐसी वॉयलेंस को और गलत एवं नेगेटिव रोल को हीरो की तरह पेश करने से हमारे बच्चे, खासकर 11वीं और 12वीं के बच्चे इन्हें रोल मॉडल मानने लगे हैं। हमें इस तरह की कई हिंसाएँ समाज में देखने को मिल रही हैं, जिनके एग्ज़ैम्पल्स वे फिल्मों से लेकर आते हैं।

मेरा तीसरा बिंदु है कि पंजाब के हरि सिंह नलवा का एक उच्च कोटि का इतिहास है। उसमें एक गाना है - 'फड़के गंडासी मारी, अर्जन वैल्ली ने'। इस इतिहास को एक गैंगवार ने दो परिवारों की नफरत की लड़ाई में, जिसका बेटा अपने बाप के प्यार के लिए मरता हुआ दिखता है, यह पिक्चर उसको भी जस्टिफाई नहीं कर पाई है। इसमें वह सरेआम हॉस्टल में, कॉलेज़ में, बिल्डिंग्स में बड़े-बड़े हथियार लेकर मारता है और कोई कानून, कोई लॉ एंड ऑर्डर उसे कोई भी सजा नहीं देता है - यह भी हम पिक्चर में जस्टिफाई कर रहे हैं। उपसभापति जी, जहाँ तक अर्जन वैल्ली का सवाल है, हरि सिंह नलवा, जो सिख फौज़ के Commander-in-Chief थे, जिन्होंने मुगलों के खिलाफ, अंग्रेज़ों के खिलाफ उनकी बढ़ती हुई सत्ता को रोकने के लिए लड़ाई लड़ी थी, अर्जन सिंह नलवा उनका बेटा था । पाकिस्तान के गुजराँ से, जब 1947 में हमारा पूरा इंडिया एक साथ था, उन्होंने कई मुसलमानों को बचाने का काम किया था। इस उच्च कोटि के इतिहास को आप एक गैंगवार के रूप में उस गाने को बैकग्राउंड में रख कर दिखाते हैं, जो हमारी धार्मिक आस्था को भी बहुत ज्यादा दर्द महसूस करवाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी, जो सिखों के दसवें गुरु हैं ,वे जब मुगलों से लड़ाई लड़ रहे थे ,तो एक डाडी फोक होता है ,जिसके तहत आप एक फोक सॉन्ग से अपनी फौज में जोश पैदा करते हैं, ...(**समय की घंटी**)... सर, मेरा एक ही सवाल है, मुझे 30 सेकंड दे दीजिए। प्लीज़ मेरा माइक ऑन कीजिए। Thank you, Sir.

सर, सेंसर बोर्ड ऐसी पिक्चरों को बढ़ावा कैसे दे रहा है और किस तरह से ऐसी पिक्चरें पास होकर आती हैं, जो हमारे समाज के लिए बीमारी हैं! हमारे समाज में ऐसी पिक्चरों का कोई भी स्थान नहीं होना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापति : धन्यवाद, श्रीमती रंजीत रंजन जी।

The following hon. Members associated themselves with the matter raised by the hon. Member, Shrimati Ranjeet Ranjan: Shri Jawhar Sircar (West Bengal), Shri Jose K. Mani (Kerala), Shri Sujeet Kumar (Odisha), Shri Ram Chander Jangra (Haryana), Dr. Amar Patnaik (Odisha), Shrimati Phulo Devi Netam (Chhatisgarh), Shri Rajamani Patel (Madhya Pradesh), Shrimati Priyanka Chaturvedi (Maharashtra), Shri Neeraj Dangi (Rajasthan), Shri Kanakamedala Ravindra Kumar (Andhra Pradesh), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shri Abir Ranjan Biswas (West Bengal), Dr. Santanu Sen (West Bengal) and Shrimati Vandana Chavan (Maharashtra), Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu), Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu).

श्री विवेक के. तन्खा, 'Concern over Shortage of Emergency Beds in AIIMS, Delhi.'